

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES



ISSN 2277 – 9809 (online)

ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

राम मनोहर लोहिया के समाजवादी विचार और भारतीय राजनीति पर उनका प्रभाव

डॉ० सुशांत प्रियदर्शी

सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान विभाग

डॉ० एल० के० भी० डी० कॉलेज, ताजपुर, समस्तीपुर

सार

आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन के इतिहास में राम मनोहर लोहिया (1910–1967) का एक विशिष्ट स्थान है। एक स्वतंत्रता सेनानी, समाजवादी विचारक, सांसद और संगठनकर्ता के रूप में, लोहिया ने समाजवाद का ऐसा स्वरूप विकसित करने का प्रयास किया जो यूरोपीय मार्क्सवाद की यांत्रिक नकल करने के बजाय भारत की ऐतिहासिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों के अनुकूल हो।

उनका राजनीतिक दर्शन मार्क्स, गांधी, उदारवादी लोकतंत्र, राष्ट्रवाद, जाति, पूंजीवाद, उपनिवेशवाद और केंद्रीकृत राज्य सत्ता के साथ आलोचनात्मक संवाद के माध्यम से उभरा। लोहिया ने आर्थिक असमानता और शोषण के प्रति समाजवादी चिंता को तो स्वीकार किया, लेकिन पारंपरिक मार्क्सवाद के यूरोप-केंद्रित और अत्यधिक वर्ग-केंद्रित स्वरूप की आलोचना की। साथ ही, उन्होंने अहिंसा, सविनय अवज्ञा, विकेंद्रीकरण और रचनात्मक राजनीतिक कार्यवाही के गांधीवादी विचारों को अपनाया, जबकि पारंपरिक गांधीवादी समाज सुधार की सीमाओं को अस्वीकार कर दिया। यह शोध-पत्र लोहिया के समाजवादी विचारों का परीक्षण करता है और भारतीय राजनीति पर उनके प्रभाव का मूल्यांकन करता है। यह विशेष रूप से तीन आयामों पर केंद्रित है: स्वदेशी लोकतांत्रिक समाजवाद के निर्माण का उनका प्रयास जाति, लिंग, वर्ग, भाषा और सामाजिक असमानता का उनका विश्लेषण और गैर-कांग्रेसवाद तथा विपक्षी राजनीति की उनकी रणनीति। यह पत्र तर्क देता है कि लोहिया का सबसे स्थायी राजनीतिक योगदान भारत में समाजवाद के अर्थ को केवल एक आर्थिक सिद्धांत से बदलकर सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन के एक व्यापक कार्यक्रम के रूप में विस्तारित करना था।

पिछड़े वर्गों के प्रतिनिधित्व, विकेंद्रीकरण, भाषाई समानता, गठबंधन की राजनीति और राजनीतिक सत्ता के केंद्रीकरण के विरोध से संबंधित उनके विचारों ने बाद में भारतीय राजनीति में महत्वपूर्ण घटनाक्रमों को प्रभावित किया, विशेष रूप से समाजवादी, पिछड़े वर्गों और क्षेत्रीय राजनीतिक समूहों के उदय को।

गैर-कांग्रेसवाद की उनकी रणनीति ने 1960 के दशक के बाद भारत की दलीय व्यवस्था के परिवर्तन में भी योगदान दिया। हालाँकि, लोहिया के विचारों का व्यावहारिक कार्यान्वयन असमान रहा, और उनकी विरासत का दावा करने वाले राजनीतिक आंदोलनों ने अक्सर आर्थिक समानता, लैंगिक न्याय, विकेंद्रीकरण और अहिंसा के उनके व्यापक कार्यक्रम की तुलना में जाति-आधारित लामबंदी और चुनावी रणनीति पर अधिक जोर दिया है।

मुख्य-शब्द: राम मनोहर लोहिया, समाजवाद, भारतीय राजनीतिक चिंतन, गैर-कांग्रेसवाद, जाति, सप्त क्रांति, चौखंभा राज, सामाजिक न्याय, लोकतांत्रिक समाजवाद।

परिचय

राम मनोहर लोहिया (1910–1967) आधुनिक भारत के सबसे महत्वपूर्ण समाजवादी विचारकों और राजनीतिक कार्यकर्ताओं में से एक थे। भारतीय राजनीतिक सोच में उनका योगदान खास था क्योंकि उन्होंने समाजवाद का एक ऐसा रूप विकसित करने की कोशिश की जो भारत की खास ऐतिहासिक और सामाजिक परिस्थितियों के अनुकूल हो। यूरोपीय मार्क्सवाद को पारंपरिक तरीके से अपनाने के बजाय,

लोहिया का तर्क था कि भारतीय समाजवाद को जाति, गरीबी, उपनिवेशवाद, लैंगिक असमानता, भाषाई असमानता और राजनीतिक केंद्रीकरण को ध्यान में रखना होगा। इसलिए, उनकी राजनीतिक सोच समाजवादी आर्थिक लक्ष्यों को गांधीवादी अहिंसक राजनीतिक संघर्ष और लोकतांत्रिक भागीदारी के तरीकों के साथ जोड़ने का एक प्रयास थी (लोहिया, 1963, पृ. 29–39)।

मार्क्सवाद और गांधीवाद के साथ लोहिया का बौद्धिक संबंध न तो पूरी तरह से स्वीकार करने का था और न ही पूरी तरह से खारिज करने का। उन्होंने मशहूर रूप से कहा था कि वे न तो केवल मार्क्स-विरोधी थे और न ही मार्क्स-समर्थक बल्कि, उन्होंने बदलती ऐतिहासिक परिस्थितियों के आलोक में मार्क्स के योगदान का आलोचनात्मक मूल्यांकन करने की कोशिश की (लोहिया, 1963, पृ. 536)। उनका उद्देश्य एक ऐसा समाजवाद विकसित करना था जो एशियाई और भारतीय समाजों की वास्तविकताओं के अनुरूप हो, न कि यूरोपीय ऐतिहासिक अनुभव से विकसित अवधारणाओं को यांत्रिक रूप से लागू करना।

नतीजतन, उनका समाजवाद आर्थिक पुनर्वितरण के कार्यक्रम से कहीं अधिक व्यापक था। लोहिया भारतीय लोकतंत्र और सामाजिक प्रगति के लिए जाति को मुख्य बाधाओं में से एक मानते थे। उनका तर्क था कि सदियों से चली आ रही जाति-आधारित सामाजिक चयन प्रक्रिया ने क्षमताओं और अवसरों का असमान वितरण पैदा किया है, और इसलिए उन्होंने ऐतिहासिक रूप से वंचित समूहों के लिए विशेष अवसरों की वकालत की (लोहिया, 1963, पृ. 321–325)। इन तर्कों पर विद्वतापूर्ण चर्चा भी विशेष अवसरों के लिए लोहिया की वकालत को उनकी जाति-विरोधी राजनीति के एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में पहचानती है।

साहित्य की समीक्षा

लोहिया की अपनी रचनाएँ उनकी राजनीतिक विचारधारा को समझने के लिए सबसे महत्वपूर्ण प्राथमिक स्रोत हैं। उनकी किताब 'मार्क्स, गांधी एंड सोशलिज्म' (1963) विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें मार्क्सवाद, गांधीवाद, समाजवाद, अर्थशास्त्र, जाति और राजनीतिक कार्यों पर उनके विचारों को एक साथ लाया गया है। समाजवाद के सैद्धांतिक आधारों पर चर्चा करते हुए, लोहिया ने पारंपरिक साम्यवाद और पारंपरिक पूंजीवाद, दोनों से अपनी स्थिति को अलग बताने की कोशिश की (लोहिया, 1963, पृ. 321–341)। समकालीन विद्वान भी उनके दृष्टिकोण को भारत की ऐतिहासिक परिस्थितियों के अनुकूल समाजवाद का एक स्वतंत्र रूप बनाने की कोशिश के तौर पर देखते हैं।

उनकी किताब 'द कास्ट सिस्टम' (1964) एक और प्रमुख प्राथमिक स्रोत है। इस रचना में जाति और लिंग, वर्ग संगठन, जाति-उन्मूलन, पिछड़े वर्गों और जाति व राजनीतिक अवसरों के बीच संबंधों पर चर्चा की गई है। राममनोहर लोहिया समता विद्यालय न्यास द्वारा प्रकाशित मूल संस्करण में 147 पृष्ठ हैं। आधुनिक विद्वानों ने लोहिया की राजनीतिक सोच के कई पहलुओं से जुड़े स्वरूप (इंटरसेक्शनल कैरेक्टर) पर अधिक जोर दिया है। उनके विश्लेषण में आर्थिक वर्ग को असमानता का एकमात्र कारण नहीं माना गया बल्कि उन्होंने जाति, लिंग, नस्ल, उपनिवेशवाद और आर्थिक शोषण को आपस में जुड़ी हुई समस्याओं के रूप में देखा। गांधीवादी विचारों के साथ लोहिया के संबंधों पर तालुकदार के अध्ययन से यह भी पता चलता है कि लोहिया ने गांधीवादी विचारों को चुन-चुनकर अपनाया, खासकर अहिंसा, सत्याग्रह और जाति सुधार के संदर्भ में (तालुकदार, 2024, पृ. 413–430)।

अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्ययन के तीन मुख्य उद्देश्य हैं:

- राम मनोहर लोहिया की समाजवादी सोच के प्रमुख दार्शनिक और वैचारिक तत्वों की जांच करना।
- भारतीय राजनीतिक व्यवहार में लोहिया के योगदान का विश्लेषण करना।
- भारतीय राजनीति में लोहिया के राजनीतिक विचारों के निरंतर प्रभाव और सीमाओं का आकलन

करना।

अध्ययन पद्धति

यह शोध गुणात्मक और विश्लेषणात्मक है। यह मुख्य रूप से द्वितीयक स्रोतों और लोहिया की प्रमुख राजनीतिक रचनाओं के टेक्स्ट-आधारित विश्लेषण पर आधारित है। इस अध्ययन में उनके प्रकाशित कार्यों, भारतीय राजनीतिक सोच पर विद्वानों के साहित्य, भारतीय समाजवाद पर अकादमिक चर्चाओं और उनके राजनीतिक करियर से जुड़े शैक्षिक और संस्थागत स्रोतों का इस्तेमाल किया गया है।

इस तरीके में विश्लेषण के तीन रूप शामिल हैं। पहला, लोहिया के मुख्य विचारों की जांच उस बौद्धिक संदर्भ में की जाती है जिसमें वे विकसित हुए। दूसरा, इन विचारों को भारतीय राजनीति की प्रमुख घटनाओं, खासकर विपक्षी राजनीति के उदय और पिछड़े वर्गों के लामबंदी से जोड़ा जाता है। तीसरा, यह पत्र आलोचनात्मक रूप से इस बात का मूल्यांकन करता है कि बाद की राजनीतिक गतिविधियों ने किस हद तक लोहिया के मूल विचारों का प्रतिनिधित्व किया, उनमें बदलाव किया या उनसे अलग रास्ता अपनाया।

लोकतांत्रिक समाजवाद की लोहिया की अवधारणा

समाजवाद के बारे में लोहिया की अवधारणा कई महत्वपूर्ण मामलों में पारंपरिक मार्क्सवाद से अलग थी। उन्होंने शोषण और आर्थिक असमानता को लेकर मार्क्सवादी चिंता को तो स्वीकार किया, लेकिन इस धारणा को खारिज कर दिया कि यूरोपीय ऐतिहासिक अनुभव सामाजिक विकास का एक ऐसा मॉडल दे सकता है जो हर जगह लागू हो सके। लोहिया का मानना था कि भारत में ऐसी सामाजिक संरचनाएं, खासकर जाति व्यवस्था मौजूद थीं, जिन्हें पूंजी और श्रम के बीच के साधारण विरोध के जरिए ठीक से नहीं समझाया जा सकता था।

‘मार्क्स, गांधी और समाजवाद’ में लोहिया ने तर्क दिया कि समाजवाद को यूरोपीय वैचारिक मॉडलों पर निर्भर रहने के बजाय अपनी खुद की बौद्धिक नींव विकसित करनी चाहिए (लोहिया, 1963, पृ.321–341)। उनका यह भी मानना था कि समाजवाद को सत्तावादी राज्य नियंत्रण के बजाय लोकतंत्र और व्यक्तिगत स्वतंत्रता से जोड़ा जाना चाहिए।

साथ ही, गांधी का लोहिया के राजनीतिक तरीकों पर गहरा प्रभाव पड़ा। लोहिया ने सत्याग्रह, सविनय अवज्ञा और अहिंसा जैसी गांधीवादी अवधारणाओं को अपनाया, लेकिन उन्हें बड़े पैमाने पर लोकतांत्रिक संघर्ष के साधनों में बदलने की कोशिश की। तालुकदार (2024) का तर्क है कि गांधीवादी विचारों को अपनाने में लोहिया ने उनमें महत्वपूर्ण बदलाव किए थे, इसलिए इसे केवल पारंपरिक गांधीवाद नहीं कहा जा सकता (पृ. 413–430)।

लोहिया ने फावड़ा, जेल और वोट के प्रतीकों के जरिए अपने राजनीतिक तरीके को समझाया। फावड़ा रचनात्मक आर्थिक और सामाजिक काम का प्रतीक था जेल का मतलब था सविनय अवज्ञा के जरिए अन्याय का विरोध और वोट का मतलब था लोकतांत्रिक राजनीति में भागीदारी। यह मेल उनके इस विश्वास को दिखाता था कि समाजवाद के लिए रचनात्मक काम और राजनीतिक संघर्ष, दोनों जरूरी हैं (लोहिया, 1963, पृ. 133–134)।

जाति और सामाजिक न्याय

जाति शायद लोहिया की समाजवादी सोच का सबसे खास पहलू थी। उनका तर्क था कि भारतीय समाजवाद तब तक सफल नहीं हो सकता जब तक वह सिर्फ आर्थिक वर्ग पर ध्यान दे और जाति-व्यवस्था को नजरअंदाज करे। उनकी नजर में, जाति सामाजिक गतिशीलता को रोकती थी और मौकों को ऐतिहासिक रूप से विशेषाधिकार प्राप्त समुदायों तक ही सीमित रखती थी।

लोहिया का तर्क था कि औपचारिक समानता का सिद्धांत ऐसे समाज में नाकाफी था जहाँ सामाजिक समूहों ने सदियों से शिक्षा, रोजगार और राजनीतिक सत्ता तक असमान पहुँच का अनुभव किया हो। इसलिए उन्होंने पिछड़े और दबे-कुचले समूहों के लिए विशेष मौकों का समर्थन किया (लोहिया, 1963, पृ. 321–325)।

उनकी इस बात को श्रद्धा कास्ट सिस्टम (जाति व्यवस्था) में और विस्तार से समझाया गया है। यह रचना साफ तौर पर जाति और मौकों के बीच के रिश्ते पर बात करती है और ऐतिहासिक रूप से दबे-कुचले समूहों को विशेष मौके देने की जरूरत पर चर्चा करती है (लोहिया, 1964, पृ. 115–141)। यह लेख वंचित समूहों के साथ विशेष व्यवहार के मजबूत तर्क के साथ खत्म होता है।

इसलिए लोहिया का नजरिया बाद की भारतीय सामाजिक-न्याय की राजनीति के एक अहम सिद्धांत का पहले ही संकेत दे रहा था वास्तविक समानता के लिए ऐतिहासिक रूप से वंचित समूहों के साथ अलग तरह के व्यवहार की जरूरत हो सकती है। यह सिर्फ कल्याणकारी उपाय नहीं था, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक सत्ता के बँटवारे को बदलने की एक रणनीति थी।

सप्त क्रांति

सप्त क्रांति, या सात क्रांतियों का विचार, लोहिया के समाजवाद के दायरे को दिखाता है। उनके कार्यक्रम ने समाजवादी संघर्ष को आर्थिक असमानता से आगे बढ़ाकर कई तरह के सामाजिक और राजनीतिक दमन के खिलाफ भी खड़ा किया।

सात क्रांतियों में शामिल थे— स्त्री-पुरुष के बीच असमानता, नस्लीय या रंग-भेद, जातिगत असमानता, उपनिवेशवाद, निजी पूँजी से पैदा होने वाली आर्थिक असमानता, सैन्यवाद और लोकतांत्रिक आजादी पर पाबंदियों के ख़िलाफ संघर्ष। लोहिया ने सामाजिक बदलाव के हथियार के तौर पर बड़े पैमाने पर सविनय अवज्ञा पर भी जोर दिया (लोहिया, 1963, पृ. 531–536)।

यह ढाँचा दिखाता है कि लोहिया समाजवाद को सिर्फ राष्ट्रीयकरण या पुनर्वितरण नहीं मानते थे। उनका मकसद सामाजिक रिश्तों में व्यापक बदलाव लाना था। लोहिया पर हुई INFLIBNET की स्टडी भी 'सप्त क्रांति' को उनके समाजवादी एजेंडे का मुख्य हिस्सा बताती है।

चौखंभा राज और विकेंद्रीकरण

लोहिया का मानना था कि राजनीतिक सत्ता का बहुत ज्यादा केंद्रीकरण असली लोकतंत्र के खिलाफ है। इसलिए उन्होंने 'चौखंभा राज' या 'चार-स्तंभीय राज्य' की वकालत की, जिसके जरिए राजनीतिक सत्ता को गाँव, जिले, प्रांत और केंद्र सरकार के बीच बाँटा जाना था।

इस व्यवस्था का मकसद राजनीतिक फैसले लेने की प्रक्रिया को आम नागरिकों के करीब लाना और केंद्रीकृत नौकरशाही पर निर्भरता कम करना था। इसलिए लोहिया का विकेंद्रीकरण का विचार राजनीतिक और आर्थिक, दोनों तरह का था। इसका मकसद सिर्फ प्रशासनिक अधिकार सौंपना नहीं, बल्कि लोगों की सक्रिय भागीदारी बनाना था (लोहिया, 1963, पृ. 284–325)।

विकेंद्रीकरण का यह सिद्धांत लोकतांत्रिक समाजवाद के बारे में उनकी व्यापक समझ के अनुरूप था, जिसमें लोगों की शक्ति से राज्य की अत्यधिक शक्ति पर अंकुश लगाने की उम्मीद की गई थी। अन्य अध्ययन भी विकेंद्रीकरण और राज्य के संगठन को लोहिया के समाजवादी सिद्धांत के महत्वपूर्ण पहलुओं के तौर पर देखते हैं।

गैर-कांग्रेसवाद

भारतीय चुनावी राजनीति पर लोहिया का सबसे सीधा असर उनके 'गैर-कांग्रेसवाद' के सिद्धांत से

पड़ा। आजादी के बाद, राष्ट्रीय और राज्य स्तर की राजनीति पर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का दबदबा था। लोहिया का तर्क था कि किसी एक पार्टी का बहुत ज्यादा दबदबा लोकतांत्रिक प्रतिस्पर्धा को कमजोर करता है और कांग्रेस को हराने के लिए विपक्षी पार्टियों को मिलकर काम करना चाहिए। उनकी रणनीति जरूरी नहीं कि विपक्षी पार्टियों के बीच वैचारिक सहमति पर आधारित हो। बल्कि, यह कांग्रेस की सत्ता के एकाधिकार को तोड़ने के लिए बनाई गई एक राजनीतिक रणनीति थी। इस रणनीति का महत्व 1967 के चुनावों के दौरान साफ तौर पर दिखा, जब नौ राज्यों में गैर-कांग्रेसी सरकारें बनीं (अरोड़ा,)।

इस तरह, लोहिया के गैर-कांग्रेसवाद ने भारत में गठबंधन की राजनीति के विकास में योगदान दिया। हालाँकि शुरुआती कई गठबंधन अस्थिर थे, लेकिन उन्होंने यह दिखा दिया कि कांग्रेस का दबदबा हमेशा के लिए नहीं था। इसलिए, बाद में ज्यादा प्रतिस्पर्धी और क्षेत्रीय पार्टी सिस्टम के विकास को आंशिक रूप से लोहिया और उनके समाजवादी सहयोगियों द्वारा शुरू की गई राजनीतिक रणनीति के संदर्भ में समझा जा सकता है।

भाषा और 'अंग्रेजी हटाओ'

लोहिया की भाषा संबंधी राजनीति सामाजिक समानता के प्रति उनकी व्यापक चिंता से जुड़ी थी। उनके 'अंग्रेजी हटाओ' अभियान ने भारतीय सार्वजनिक जीवन में अंग्रेजी की विशेषाधिकार प्राप्त स्थिति को चुनौती दी। उनका मानना था कि अंग्रेजी पर निर्भरता सामाजिक और राजनीतिक बाधाएँ पैदा करती है क्योंकि अंग्रेजी शिक्षा तक पहुँच असमान रूप से बंटी हुई थी।

इसलिए उनकी आलोचना केवल सांस्कृतिक राष्ट्रवाद नहीं थी। यह इस सवाल से जुड़ी थी कि सरकार, शिक्षा, रोजगार और राजनीतिक सत्ता तक किसकी पहुँच हो सकती है। INFLIBNET अकाउंट साक्षरता और हिंदी में विश्वास तथा 'अंग्रेजी हटाओ' अभियान को लोहिया के राजनीतिक कार्यक्रम के महत्वपूर्ण पहलुओं के रूप में पहचानता है।

भारतीय राजनीति पर प्रभाव

भारतीय राजनीति पर लोहिया के प्रभाव को कई क्षेत्रों में देखा जा सकता है। पहला, जाति पर उनके जोर ने पिछड़े वर्गों की राजनीति के बौद्धिक विकास में योगदान दिया। दूसरा, उनके गैर-कांग्रेसवाद के सिद्धांत ने विपक्ष की एकता को बढ़ावा दिया। तीसरा, विकेंद्रीकरण पर उनके तर्कों ने स्थानीय लोकतंत्र से जुड़ी व्यापक बहसों में योगदान दिया। चौथा, सामाजिक प्रतिनिधित्व पर उनके जोर ने भारतीय समाजवाद को वर्ग-आधारित राजनीति से आगे बढ़ाने में मदद की।

जाति-विरोधी रुख विशेष रूप से महत्वपूर्ण था। लोहिया का तर्क था कि अवसरों के वितरण को बदले बिना केवल जाति की निंदा करना अपर्याप्त होगा। इसलिए उन्होंने पिछड़े समूहों के लिए विशेष अवसरों की वकालत की (लोहिया, 1963, पृ. 321–325)। उनके विचारों पर बाद में हुई सार्वजनिक चर्चा में भी उसी तर्क को दोहराया गया कि ऐतिहासिक रूप से विशेषाधिकार प्राप्त समूहों से यह उम्मीद नहीं की जा सकती कि वे उन समूहों के साथ बराबरी के स्तर पर प्रतिस्पर्धा करें जिनके अवसर व्यवस्थित रूप से सीमित कर दिए गए थे।

चर्चा

लोहिया के विचारों की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता आर्थिक समानता, सामाजिक समानता और राजनीतिक लोकतंत्र को एक साथ लाने की उनकी कोशिश है। पारंपरिक मार्क्सवाद के विपरीत, उनके समाजवाद को केवल वर्ग-संघर्ष तक सीमित नहीं किया जा सकता था। पारंपरिक उदारवाद के विपरीत, वे केवल औपचारिक समानता को ही काफी नहीं मानते थे। और पारंपरिक गांधीवाद के विपरीत, उन्होंने

संरचनात्मक पुनर्वितरण के लिए एक अधिक क्रांतिकारी कार्यक्रम की वकालत की। जाति के बारे में लोहिया का नजरिया इस मेल को विशेष रूप से स्पष्ट करता है। वे समझते थे कि जाति और वर्ग एक-दूसरे को मजबूत कर सकते हैं। इसलिए, जाति को खत्म करने के लिए कानूनी सुधारों के अलावा राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक उपायों की भी जरूरत थी (लोहिया, 1964, पृ. 115–141)। उनकी राजनीतिक रणनीति का भी गहरा असर पड़ा। गैर-कांग्रेसवाद ने एक नई राजनीतिक सोच को जन्म दिया, जिसमें विपक्षी दल वैचारिक मतभेदों के बावजूद सहयोग कर सकते थे। 1967 के चुनावों ने इस रणनीति का एक महत्वपूर्ण उदाहरण पेश किया। बाद में भारतीय राजनीति में जो बिखराव और क्षेत्रीयकरण हुआ, उसके लिए पूरी तरह से लोहिया को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता, लेकिन उनके राजनीतिक विचारों ने इस प्रक्रिया के लिए एक महत्वपूर्ण वैचारिक आधार प्रदान किया। साथ ही, कुछ सीमाएँ भी थीं। लोहिया का समाजवादी आंदोलन संगठन के स्तर पर बिखरा हुआ था और विपक्षी गठबंधन अक्सर अस्थिर रहते थे। इसके अलावा, बाद के राजनीतिक आंदोलनों ने कभी-कभी उनके जाति-आधारित सामाजिक न्याय कार्यक्रम को तो अपनाया, लेकिन आर्थिक समानता, लैंगिक समानता, विकेंद्रीकरण और अहिंसा जैसे उनके व्यापक मुद्दों पर कम ध्यान दिया।

निष्कर्ष

राम मनोहर लोहिया की समाजवादी सोच भारत में एक स्वदेशी लोकतांत्रिक समाजवाद को आकार देने के सबसे विशिष्ट प्रयासों में से एक है। उनके राजनीतिक दर्शन में मार्क्सवाद, गांधीवाद और भारतीय सामाजिक वास्तविकताओं के तत्वों का मेल था, जबकि उन्होंने इनमें से किसी एक के साथ पूरी तरह से जुड़ने से इनकार कर दिया।

उनका सबसे स्थायी योगदान इस बात पर जोर देना था कि आर्थिक और सामाजिक असमानता का सामना एक साथ किया जाना चाहिए। जाति पर उनका विश्लेषण विशेष रूप से महत्वपूर्ण था क्योंकि उन्होंने पहचाना था कि औपचारिक राजनीतिक समानता गहरी पैठी हुई सामाजिक ऊँच-नीच को खत्म नहीं कर सकती। इसलिए, विशेष अवसरों की उनकी वकालत बाद की सामाजिक न्याय की राजनीति के लिए एक महत्वपूर्ण बौद्धिक आधार बनी।

सप्त क्रांति, चौखम्भा राज, सविनय अवज्ञा और गैर-कांग्रेसवाद से जुड़े उनके विचारों ने उनकी राजनीतिक दूरदर्शिता के व्यापक दायरे को और स्पष्ट किया। पिछड़े वर्गों की राजनीति, गठबंधन सरकारों, क्षेत्रीय राजनीतिक दलों और विपक्ष की मजबूत परंपराओं के उदय में उनके प्रभाव को देखा जा सकता है।

फिर भी, लोहिया की विरासत को केवल चुनावी जाति की राजनीति या गैर-कांग्रेसवाद तक सीमित नहीं किया जाना चाहिए। उनकी मूल सोच काफी व्यापक थीरु वे एक ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते थे जो आर्थिक समानता, जाति-उन्मूलन, लैंगिक समानता, विकेंद्रीकृत लोकतंत्र, भाषाई न्याय, अहिंसा और राजनीतिक स्वतंत्रता पर आधारित हो। समाजवाद की इसी व्यापक सोच के कारण भारतीय राजनीतिक चिंतन के अध्ययन में लोहिया आज भी प्रासंगिक बने हुए हैं।

संदर्भ

1. लोहिया, आर. एम. (1963). मार्क्स, गांधी और समाजवाद, नवहिंद, नई दिल्ली, पृ. 29–39
2. लोहिया, आर. एम. (1963) मार्क्स, गांधी और समाजवाद, राममनोहर लोहिया समता विद्यालय न्यास, पृ. 536
3. वही, पृ. 321–325
4. वही, पृ. 321–341
5. लोहिया, आर. एम. (1964) जाति व्यवस्था, राममनोहर लोहिया समता विद्यालय न्यास, नई दिल्ली,

पृ. 161

6. तालुकदार, बी. बी. (2024) राममनोहर लोहियारू एक विधर्मी गांधीवादी? गांधी मार्ग, 45(4), 413–430।
7. लोहिया, आर. एम. (1963) उपरोक्त, पृ. 133–134
8. लोहिया, आर. एम. (1964) उपरोक्त पृ. 115–141
9. लोहिया, आर. एम. (1963) उपरोक्त, पृ. 531–536
10. अरोरा, वी. (दिनांक अज्ञात)। समाजवादी हस्तक्षेप: राम मनोहर लोहिया। INFLIBNET केंद्र।
11. लोहिया, आर. एम. (1963) उपरोक्त, पृ. 284–325
12. अरोरा, वी. के. (1984)। राममनोहर लोहिया और भारत में समाजवाद। दीप एंड दीप पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, पृ. 142
13. द्विवेदी, एस. (1984)। समाजवाद की खोज: भारत में पचास वर्षों का संघर्ष। रेडिएंट पब्लिशर्स, सीआईबीजीपी, पृ. 124
14. लोहिया, आर. एम. (1952). विश्व मन के अंश, मैत्रायणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली, पृ. 61
15. लोहिया, आर. एम. (1955). इतिहास का पहिया, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस, नई दिल्ली, पृ. 44
16. लोहिया, आर. एम. (1966). भाषा, राममनोहर लोहिया समता विद्यालया न्यास, जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस, नई दिल्ली, पृ. 72
17. मेहरोत्रा, एन. एम. (2010). लोहिया का समाजवादरू एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, दीप एंड दीप पब्लिकेशंस। जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस, नई दिल्ली, पृ. 69
18. मेहता, वी. आर. (1985). भारत में विचारधारा, आधुनिकीकरण और राजनीति। मनोहर पब्लिशर्स। जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस, नई दिल्ली, पृ. 83



EARN YOUR MBA

WWW.IIMPS.IN



Accreditation & Ranking



UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

☎ 011-41005174

RESEARCH
GATEWAY

STOP PLAGIARISM



Arogyam Ayurveda
Holistic Healing through herbs



AROGYAM
ONLINE

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

परिवर्तन

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD



BLUE

Calms your Child's
Mind & Body

YELLOW

Promotes Concentration,
Stimulates the Memory

PINK

Evokes Empathy,
makes your Child Calm

RED

Excites and energizes
your Child's body

GREEN

Improves Reading speed
and Comprehension

www.parivartan4u.com



परिवर्तन

Confuse about your children's future?

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY**

ISSN – 2250 – 1959 (O) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
COMMERCE, ARTS AND SCIENCE**

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES**

ISSN 2277 – 9809 (O) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSSH.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE
ENGINEERING AND TECHNOLOGY**

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM



**INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION**

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSSI.COM



**JOURNAL OF LEGAL STUDIES, POLITICS
AND ECONOMICS RESEARCH**

WWW.JLPER.COM

JLPE